किसी सजन के घर कीर्तन की

ड्यूटी-योग्यता-युक्ति

(सेवा - भाव)

(भाग–3)

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)

प्राक्कथन

युग-युग में कुदरती ग्रन्थ आते हैं, जिनमें कुदरत के सत्य का वर्णन होता है और उस वर्णित सत्य को ग्रहण करना मनुष्य जीवन-काल में अति आवश्यक होता है। यहां विडम्बना यह है कि इन ग्रन्थों में वर्णित सत्य को कोई विरला ही समझ व धारण कर पाता है और फिर वह असत्यता में विचरते हुए सजनों को सत्य के संग की प्रवृत्ति में ढालने का सत्संग द्वारा यत्न करता है, ताकि अधिकाधिक सजन सत्वगुणी अर्थात् उत्तम प्रकृति वाले बनें। सत्संग में फिर अध्यात्म-सम्बन्धी चर्चा होती है। इस प्रकार समाज में ऐसी धार्मिक सभा का गठन होता है और उस सभा में आने वाला हर सजन सत्संगी अर्थात् अच्छी संगति में रहने वाला कहलाता है और वह सब से मेल-जोल रखने वाला माना जाता है।

सत्संग एक प्रकार से सजनों का संग साथ है और सत्संग द्वारा ही आत्मतत्व अर्थात् जीवन शक्ति का सत्य रूप से ज्ञान होता है। जो सजन प्रकृति का वह गुण जो अच्छे कामों की ओर प्रवृत्त करता है, उसे धारण कर लेता है तो वह सत्वगुण की प्रधानता के कारण सत्यवान, दृढ़ संकल्प वाला, सदाचारी, धीर, धर्मशास्त्र का ज्ञाता, धर्म करने वाला, धार्मिक शिक्षा देने वाला, पुण्य-कार्य करने वाला, मर्यादा-पुरुषोत्तम कहलाता है। यही श्रेष्ठ गुण-धारी फिर धर्म अधिकारी न्यायाधीश की भांति सत्संग में आने वाले हर सजन की परख कर उसमें निहित सत्य का सरलता व स्पष्टता से बोध कराते हुए सत्संगियों के मन में उस सत्य ज्ञान की उत्तमता जता उसके प्रति उन्हें उमंगित व उत्साहित करता है।

उपरिलिखित उद्देश्य-पूर्ति के लिए सत्संग व्यवस्था का प्रबन्ध सुचारु रूप से बनाए रखने के लिए एक ऐसे विधान की आवश्यकता होती है जो सत्संग के सभी सदस्यों को भली प्रकार से कार्य अथवा आचरण करने के लिए बाध्य करे ताकि हर सजन आदेश पालन की योग्यता से भरपूर हो और उस सजन को मान-अपमान, वड-छोट, अमीरी-गरीबी का भेद-भाव न छू पाए या प्रभावित न कर पाए क्योंकि केवल इसी प्रकार ही सत्संग में समभाव-समदृष्टि और एकता का वातावरण पनप सकता है और बना रह सकता है। इसीलिए इस पुस्तक की

रचना आवश्यक समझी गई ताकि हर सभा संचालक का प्रयत्न फलीभूत हो और कलयुगी-जीवों का उद्धार हो सके। उनके हृदय में भी प्रकाश-किरण ज्योति-पुंज हो उठे और वे इसी जीवन में समवृत्ति एवं समदृष्टि बन इस मनुष्य चोले का भरपूर आनन्द और सुख मान सकें।

इस सन्दर्भ में सेवा-भाव का महत्व देखते हुए सत्संग की सत्संगियों द्वारा हर प्रकार की सेवा का वर्णन कर उनको उस सेवा के लिए योग्यता और युक्ति के प्रति जागरूक बनाए रखने के लिए प्रयास किया गया है। इसीलिए अब हर सजन का कर्तव्य हो जाता है कि वह इस पुस्तक में लिखित विधान का गंभीरता और निर्भयता से पालन करता हुआ, सत्संग में आने वाले हर सत्संगी को आत्मिक उन्नति प्रदान करने के लिए "मैं" को त्याग कर, सहनशील बन निष्काम-भाव से अपनी योग्यता अनुसार सेवा करे ताकि हर मन, परिवार और कुल संसार में शांति का साम्राज्य स्थापित हो। **यही सतयुग है, क्योंकि :**

सतवस्तु में विचार ते सतजबान होसी,
एक दृष्टि एकता महान होसी,
न जप, न तप, न भजन, न बन्दगी,
एक अवस्था ओ जगत जहान होसी।

जिससे हर सजन अपनी असलियत की पहचान कर, जेहड़ा मन-मन्दिर प्रकाश है ओही असलियत ज्योति-स्वरूप मेरा अपना आप, पर खड़ा हो एक निगाह एक दृष्टि और एक दर्शन पर परिपक्वता से ठहर जड़-चेतन में, उसी एक दर्शन का आभास कर सजन-भाव में गुढ़ सकेगा। **याद रखोः-**

असलियत स्वरूप है जे ब्रह्म
जैंदा रूप रेखा नहीं रंग।
ईश्वर है अपना आप प्रकाश
ईश्वर है जे अजपा जाप।
विचार ईश्वर आप नूं मान
विचार ईश्वर आप नूं ही मान।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	ड्यूटी का विषय	पृष्ठांक
1.	कीर्तन - सामान्य नीति	1-3
2.	कीर्तन वाले दिन घर का वातावरण कैसा हो?	4
3.	बिछाई	5
4.	द्वारे से शास्त्र की सवारी कीर्तन वाले घर ले जाना	6-7
5.	सभा में मौन-व्रत देखना व सजनों को अनुशासित ढंग में रखना	8
6.	विधि करना व कीर्तन बोलना	9-10
7.	साज (हारमोनियम, ढोलक व रोड़ा) बजाना	11
8.	खजाने का रख-रखाव	12
9.	शास्त्र पढ़ना	13
10.	प्रशाद बनाना	14
11.	भोग लगवाना	15
12.	आरती	16
13.	प्रशाद बाँटना	17
14.	बिछाई समेटना	18

Request for this book

Email
info@satyugdarshantrust.org